प्रो० जे० के० गोदियाल
विभागाध्यक्ष
दूरभाष : 01346- 257134 (नि0)
250172 (नि0)
मो0. : 9412115186 / 7830222502

संस्कृत-विभाग
पौड़ी परिसर
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल
केन्द्रीय विश्वविद्यालय
पौड़ी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड-246001

पत्रांक......................

दिनांक 20-2-13

श्री मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ द्वारा विरचित पुस्तक का पार्सल प्राप्त हुआ। खोलते ही पुस्तक का शीर्षक 'काशी मरणान्मुक्ति' पढ़कर यह जानने में देर नहीं लगी कि प्रसिद्ध दार्शनिक उक्ति- 'काश्यां मरणान्मुक्तिः' का रूपान्तरण ही इस ग्रन्थ का शीर्षक है।

शीर्षक पढ़कर विचार किया कि प्रस्तुत कृति शुद्ध दार्शनिक होगी। यथा अवसर पुस्तक को देखा, कुछ पढ़ा और पाया कि यह विचारित से भिन्न है। प्रस्तुत रचना अध्यात्म, संस्कृति, साहित्य, धर्म तथा समाज एवं उसकी प्रकृति को आत्मसात् किए हुए है। इसको किसी एक विधा से युक्त करना संभवतः उपयुक्त नहीं होगा। ग्रन्थ में काशी का माहात्म्य पौराणिक संदर्भ, ईश्वरीय निर्वचन तथा सृष्टि संरचना का प्रसंग सुविचारित भाषा में उपनिबद्ध है।

पुस्तक जितने श्रम से विनिर्मित है उसे हृदयङ्गम करना उतना सुकर नहीं है। लेखकद्वय का यह प्रयास स्तुत्य है। इस निमित्त दोनों साहित्य-साधकों को हार्दिक बधाई। प्रख्यात दाक्षिणात्य आचार्य 'वेङ्कटनाथ' की यह उक्ति कि- "अगर भगवती भारती किसी को आश्रय बनाकर प्रकट होना चाहे, तो, उसे कौन रोक सकता है"- प्रस्तुत संदर्भ में सार्थक टिप्पणी होगी।

इति शुभम् —

डॉ. जयकृष्ण गोदियाल

Head of the Dept.
of Sanskrit
H. N. B. Garhwal University Pauri Campus
Pauri Garhwal